

भगवान् महावीर का तप साधना

डॉ. देवाश्रय प्रसाद सिंह

श्रमण भगवान् महावीर ने साढ़े बारह वर्षों तक अपने आत्मा की दिव्य साधना की। सुख, समृद्धि व वैभवगत आसक्तियों को त्याग कर अकिंचिन बन से सत्य की साधना में निरन्तर लीन रहे। उनका दिव्य एवं भव्य संयमी जीवन साधनामय जीवन का उत्कृष्टम उदाहरण है। इस जीवन का प्रत्येक पृष्ठ समता, सहिष्णुता, परदुःखकातरता, त्याग, तपस्या, ध्यान और अभय की भावना से ओत-प्रोत था। उन्होंने यह दीर्घ साधना—काल मौन आत्म—चिन्तन, आत्म—पर्यालोचन, उग्र ध्यान एवं उत्कट संयम की आराधना में व्यतीत किया।

इस साधना—काल में उन पर अनेक विपत्तियाँ एवं उपसर्ग आये। प्राकृतिक, मानवीय व दैवी संकटों के प्राणघातक तूफान प्रलयकाल की तरह घिर-घिर कर आये पर वर्द्धमान में अदम्य साहस, अपराजेय संकल्प व आत्म—बल के सहारे उनका डट कर मुकाबला किया। उन्होंने अपूर्व कष्ट—सहिष्णुता, क्षमा और तितिक्षा का आदर्श उपस्थित किया। त्याग और तपस्या की साधना का इस प्रकार का आदर्श मानव—समाज में और मिलना दुर्लभ है।